

Poorest Areas Civil Society (PACS) Programme Case study template

स्वावलंबन की ओर



मेरा नाम मंजु देवी है। मेरी बहन का नाम संजु देवी है। हम दोनों बहनें नवादा जिला के रहने वाली हैं। मेरे मां-बाप ने हम दोनों बहनों की शादी दो सगे भाईयों के साथ ग्राम अरैला, प्रखण्ड-बजीरगंज, जिला गया में कर दी। शुरु में हम दोनों बहने आपस में घुल मिलकर रहती थी। हमारे पति एवं देवर खेती-मजदूरी का काम करते थे। समय बीतता गया। हम दोनों बहनों को पांच-पांच बच्चे हुए। धीरे-धीरे आपसी तनाव शुरु हुआ। फिर हम कुछ ही दिनों में अलग हो गये। दोनों भाई अलग-अलग मजदूरी करने लगे। हमारी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रही। दो जून की रोटी का जुगाड़ कर पाना अब मुष्किल सा हो गया। पति-पत्नी में भी झगड़े होने लगे। बच्चों की पढ़ाई छुट गई।

एक दिन अणु विकास संस्थान, मोहड़ा, जिला गया के कार्यकर्ता, जिसे हम प्यार से साधु भैया कहते थे, वे हमारे टोले में आये। सभी महिलाओं को एक जगह बुलाकर स्वयं सहायता समूह बनाने एवं उससे होने वाले फायदों के बारे में समझाया। उनकी बातों में सच्चाई लगी। हम सभी बहनों ने उनके मार्गदर्शन एवं उत्प्रेरणा से कमला स्वरोजगार समूह, अरैला के नाम से समूह का गठन किया। इस समूह में हम दोनों बहनें सदस्य के रूप में जुड़कर आपसी बचत करने लगीं। समय ने करवट बदला। सोच में परिवर्तन आया। मैं (मंजु देवी) और मेरी बहन संजु देवी ने समूह से लोन/ऋण लेकर एक-एक बैल खरीदा और बटाईदारी पर खेती करने लगे। खेती से फायदा हुआ। खाने पीने की समस्याएं करीब-करीब समाप्त हो गईं। समय पाकर अपने बच्चों को भी स्कूल में नाम लिखवा दिया। कुछ दिनों बाद संस्था के सहयोग से प्रखण्ड द्वारा बैंक के माध्यम से हम दोनों बहनों को सबसीडी के साथ दस-दस हजार रुपये दिए गए। मैंने दस हजार की एक गाय एवं मेरी बहन संजु ने दस हजार रुपये की खिचड़ी परोस (जेनरल स्टोर) खोला। धीरे-धीरे हमने सबसीडी वाला पैसा चुकता कर दिया और अपनी पूंजी भी बरकरार रखी। आज हम दोनों बहने आर्थिक रूप से सबल हो चुकी हैं। हमारा व्यवसाय अपेक्षा से कहीं ज्यादा बेहतर चल रहा है।

परिणाम: स्वयं, समूह एवं संस्था के सहयोग से हमारी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई। बच्चे स्कूल जाने लगे हैं। पति को व्यवसाय मिला जिसमें हम दोनों मिलकर अपनी जिंदगी की गाड़ी को बेहतर चला रहे हैं।

प्रेरणा-जिंदगी का निर्वाह करने में जब परेषानी हो तो इंसान को अपना धैय नहीं खोना चाहिए जैसे मंजु देवी ने किया। आत्म-संयम, आत्मविश्वास, स्वजागृति एवं संगठित होकर कोई भी कार्य को किया जा सकता है जिसके परिणाम सदैव सकारात्मक ही आते हैं।

